टिप्पणी

5

दिल्ली सल्तनत की स्थापना

छठी शताब्दी से सोलहवीं शताब्दी तक के कालखंड को मध्यकालीन युग माना जाता है। इस काल में कई राजवंशों ने भारत पर शासन किया। इस युग में अनेक युद्ध हुए जिनमें नए हथियारों तथा नई रणनीतियों का प्रयोग किया गया। इस पाठ में हम दिल्ली सल्तनत के उदय (1206 ई.पू.) पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे जो 1857 में अंग्रेजों द्वारा आखिरी मुगल शासक बादशाह शाह जफर को उखाड़ फेंकने तक था और जिसके बाद भारत में औपनिवेशिक शासन का मार्ग प्रशस्त हो गया। इस काल में युद्ध का मुख्य उद्देश्य दुश्मन को हराकर विजय प्राप्त करना था।

इस पाठ के माध्यम से आपको यह ज्ञात होगा कि युद्ध में सैनिकों की संख्या कोई मायने नहीं रखती अपितु रणनीति एवं बहादुरी महत्वपूर्ण होती है जो विजय के रूप में सामने आती है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न शासकों ने नवीन तकनीकों का आविष्कार तथा प्रयोग किया जिसने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अनुभवी सेवाएं निर्मित करने में योगदान दिया। इस पाठ में आप सेना की विभिन्न घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे जो भिन्न-भिन्न विदेशी आक्रमणों से शुरू होकर मुस्लिम शासन की स्थापना तक चलीं। आप युद्ध क्षेत्र की तकनीकों व उनकी असफलता के कारणों का भी अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप:-

- भारत में विदेशी आक्रमण के लिए उत्तरदायी कारकों व उनके प्रभावों की व्याख्या कर सकेंगे;
- सैन्य प्रणाली में हुए विकास का वर्णन कर सकेंगे;
- दिल्ली सल्तनत की कमजोरियों के कारणों की पहचान कर सकेंगे।

5.1 मध्यकालीन भारत में विदेशी आक्रमण

क्या आप जानते हैं कि भारत में पहला विदेशी आक्रमण कब हुआ था? यह 5वीं शताब्दी ई. पू. में फारसी शासक डारियस द्वारा भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग पर किया गया आक्रमण था। यह भूभाग उस समय छोटे राज्यों में बंटा हुआ था। इसी कारण राजा डारियस अपने आक्रमण में सफल हुआ और भारतीय भूभाग पर कब्जा कर पाया। तत्पश्चात् अनेक विदेशी आक्रमण हुए। इन विदेशी आक्रांताओं का एकमात्र उद्देश्य विजय प्राप्त करके दौलत प्राप्त करना था।

इन आक्रमणों से नुकसान तो हुआ परन्तु विभिन्न क्षेत्रों जैसे नयी भाषा का परिचय, नवीन धार्मिक विश्वास और पूजा पद्धति, कला व संस्कृति के साथ नया सैन्य संगठन, नए हथियार और नये तरीके भी शुरू हुए।

सबसे प्रमुख विदेशी आक्रांता सुल्तान शहाबुद्दीन मोहम्मद गोरी है। इसके विस्तार का मुख्य कारण भारत में अपने पांव जमाना तथा विशाल सम्पत्ति का अधिग्रहण करना था। इसके आक्रमण ने भारत में पहली बार मुस्लिम शासन की स्थापना की।

? क्या आप जानते हैं?

मोहम्मद ग़ोरी वर्तमान मध्य अफगानिस्तान के ग़ोर नामक एक छोटे से क्षेत्र का शासक था। वह मूल रूप से एक तुर्की था तथा भारत सहित पड़ोसी देशों का रुख़ करके अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था।

मोहम्मद ग़ोरी ने आक्रमण खैबर दर्रा से किया। यह दर्रा अफगानिस्तान की राजधानी काबुल को वर्तमान पाकिस्तान में पेशावर से जोड़ता है। भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो हिमालय पर्वत श्रृंखला; उत्तर, उत्तर पश्चिम तथा पूर्वी भाग में भारत की प्राकृतिक सीमा के रूप में कार्य करती है जबकि महासागर दक्षिण दिशा से भारत की रक्षा करते हैं। खैबर दर्रे के आस-पास पहाड़ियों की ऊँचाई कम होने के कारण विदेशी आक्रमणकारियों को यही रास्ता मिला। मोहम्मद ग़ोरी के लिए भारत पर कब्जा कर अपना शासन स्थापित करना आसान काम नहीं था क्योंकि उसे भारतीय स्थानीय शासकों के साथ दो बार युद्ध करना पड़ा। 1191 ई. में पहली बार और इसके अगले वर्ष 1192 ई. में दूसरी बार। दोनों अवसरों पर उसका सामना राजपूत राजा पृथ्वीराज चौहान से हुआ जो अजमेर व दिल्ली का शासक था। इन युद्धों को 'तराइन के युद्ध' के रूप में जाना जाता है।

? क्या आप जानते हैं?

राजपूत एक क्षत्रिय वर्ग है। संस्कृत भाषा में राजपूत का अर्थ है 'राजपुत्र' अर्थात् राजा का पुत्र। राजपूत भारत के उत्तर के अधिकांश क्षेत्र में सक्रिय थे तथा विभिन्न कुलों में विभाजित थे। इनकी निष्ठा अलग-अलग कुलों के लिए थी न कि राजाओं के लिए।

टिप्पणी

आक्रमणों का प्रभाव

इन आक्रमणों का प्रभाव यह हुआ कि इन्होंने न केवल मुस्लिम शासन की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया बल्कि खैबर दर्रा एक ऐसा मार्ग बन गया जिसके माध्यम से बाद में विदेशी आक्रमण संभव हो गए। जैसा कि हम बाद में देखेंगे कि बाबर का आक्रमण भी इसी मार्ग से हुआ था जिसके कारण मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई।

पाठगन प्रश्न 5.1

1. भारत में विदेशी आक्रमण क्यों हुए थे?
2. मोहम्मद ग़ोरी ने भारत पर आक्रमण क्यों किया?
3. खैबर दर्रा कहाँ स्थित है?
4. राजपूत कौन थे?
5. मोहम्मद ग़ोरी के आक्रमण का क्या प्रभाव हुआ?

5.1.1 तराइन के युद्ध और मुस्लिम शासन का समेकन

जैसा कि आपको ज्ञात है तराइन के युद्ध ने भारत में मुस्लिम शासन को शुरूआती प्रवेश दिया। किन्तु शीघ्र ही वे मंगोल आक्राताओं के नियमित खतरों तथा आंतरिक विद्रोह से जूझते दिखे। यह आंतरिक विद्रोह उनके अपने वंश तथा राजपूत मुखियाओं की ओर से था। इन्हीं समस्याओं के साथ वे अपने साम्राज्य के विस्तार हेतु युद्ध करने लगे। आप यह देखेंगे कि दिल्ली सल्तनत का प्रत्येक शासक इन समस्याओं को अपने तरीके से हल किया। दिल्ली सल्तनत में खिलजी तथा तुगलक वंश ने अपना साम्राज्य पश्चिम व दक्षिण की तरफ बढ़ाया। सुदृढ़ किले बनाकर मंगोल आक्रमणों को प्रभावशाली ढंग से रोका।

1. **तराइन का प्रथम युद्धः** 1911 में मोहम्मद ग़ोरी तथा राजा पृथ्वीराज चौहान के मध्य वर्तमान हरियाणा के थानेश्वर शहर के पास हुआ था। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान विजयी हुआ। 1192 में तराइन के दूसरे युद्ध में मोहम्मद ग़ोरी ने पृथ्वीराज को हरा दिया तथा उसे उत्तरी भारत में पैर जमाने का मौका मिला और भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना हुई। मोहम्मद ग़ोरी ने खैबर दर्रा पार करके भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग (वर्तमान में पंजाब) पर आक्रमण किया और भटिण्डा के किले पर कब्जा कर लिया, जो राजपूत राज्य की बाहरी चौकी थी।

   इस पर पृथ्वीराज ने जवाबी आक्रमण किया और भटिण्डा को दोबारा जीत लिया क्योंकि ग़ोरी इस आक्रमण का मुकाबला नहीं कर पाया। यह युद्ध पृथ्वीराज की जीत थी क्योंकि ग़ोरी की सेना मुकाबला नहीं कर सकी और पीछे हट गई। ग़ोरी मौत से बच गया और उसे उसके वफादार गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक ने बचा लिया जिसने बाद में दास वंश का शासन स्थापित किया।

   पृथ्वीराज की ओर से कमी यह रह गयी कि उन्होंने अपने दुश्मन को दूर तक नहीं

टिप्पणी

खदेड़ा। वह केवल भटिण्डा के किले से ही संतुष्ट हो गया। यदि पृथ्वीराज उस समय ग़ोरी को मार देता, तो आज सैन्य शक्ति का इतिहास अलग ही होता। शायद भारतीय मध्यकालीन इतिहास में न तो दिल्ली सल्तनत होती और न ही मुगल शासक होते। किन्तु मुस्लिम शासन की स्थापना से सैन्य संरचना, सैन्य सुधार, नए हथियार और नयी तकनीक तथा युद्ध के मैदान के तरीकों में परिवर्तन हुआ।

हमें यह समझना होगा कि प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज की विजय का लाभ नहीं उठाया गया इसलिए ग़ोरी अगले वर्ष बदला लेने आया और तराइन के दूसरे युद्ध में पृथ्वीराज की सेना पर आक्रमण कर दिया।

? क्या आप जानते हैं?

पृथ्वी राज चौहान एक अनुकरणीय शासक और सैन्य रणनीतिकार थे। ऐसा कहा जाता है कि ध्वनि के बल पर ही लक्ष्य भेदने की कला उनमें थी। उसने कई राज्यों जैसे चंदेल, गढ़वाल आदि को हराकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया। गढ़वाल शासक जयचंद्र ने पृथ्वी राज चौहान की महत्वकांक्षा पर अंकुश लगाने की कोशिश की।

ऐसा कहा जाता है कि पृथ्वी राज चौहान ने जयचंद्र की बेटी संयोगिता का अपहरण कर लिया था, जब उन्हें 'स्वयंवर' के लिए आमंत्रित नहीं किया गया था। इस घटना को चांद बरदाई ने अपने महाकाव्य पृथ्वी राज रासो में लिखा है।

पृथ्वी राज चौहान प्रमुख सैन्य उपलब्धि 1191 में तराइन की पहली लड़ाई में सफलता थी। उसने मुहम्मद ग़ोरी की सेना को पीछे हटने के लिए विवश कर दिया। ऐसा कहा जाता है कि उसने राजपूत सम्मान और परंपरा की रक्षा के लिए पीछे हटने वाली सेना पर हमला नहीं किया। अगले वर्ष, 1192 में मुहम्मद ग़ोरी ने फिर से हमला किया और इस बार पृथ्वी राज चौहान की हार हुई। बहुत से शासक पृथ्वी राज चौहान के विरुद्ध हो गए थे और तराइन के दूसरे युद्ध में उसकी सहायता नहीं की। पृथ्वी राज चौहान की हार ने भारत में तुर्की शासन की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया जो लगभग 300 वर्षों तक जारी रहा।

युद्ध	कब	कहाँ	किनके मध्य
तराइन का प्रथम युद्ध	1191 ई.	तराइन, हरियाणा	मोहम्मद ग़ोरी और पृथ्वीराज चौहान पृथ्वीराज चौहान की जीत हुई
तराइन का द्वितीय युद्ध	1192 ई.	तराइन, हरियाणा	मोहम्मद ग़ोरी और पृथ्वीराज चौहान मोहम्मद ग़ोरी की जीत हुई

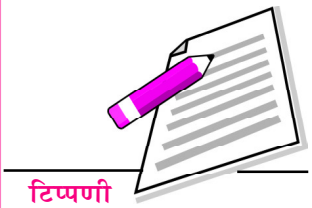

दिल्ली सल्तनत के शासन के सकारात्मक बिन्दु क्या है?

- सैन्य संरचना में परिवर्तन हुए
- सैन्य सुधार कार्यक्रम अपनाए गए
- नए हथियारों का प्रयोग शुरू हुआ
- तराइन का द्वितीय युद्ध इसलिए महत्वपूर्ण है कि मोहम्मद ग़ोरी ने अधिक संख्या बल वाली राजपूत सेना को पराजित किया था। इसका कारण यह है कि ग़ोरी की सेना ने तीव्र सैन्य तकनीक का प्रयोग किया। राजपूतों की सेना धीमी गति से युद्ध कर रही थी यद्यपि वह संख्या में अधिक थी। ग़ोरी की सेना मजबूत संगठित व अच्छे नियंत्रण में थी। घोड़ों के पैरों में नाल लगी हुई थी जिससे उनकी गति एवं जीवन बढ़ गया था। मोहम्मद ग़ोरी की युद्ध तकनीक के कारण राजपूत सेना मैदान के मध्य में आ गयी। मोहम्मद ग़ोरी ने राजपूत सेना को चारों ओर से घेर लिया और दोनों ओर से भीषण हमला कर दिया। इसके साथ ही ग़ोरी की सेना हमेशा आक्रमण के लिए तैयार थी और उनके पास आक्रमण के लिए स्थान चुनने का विकल्प था। इन तकनीकों ने मोहम्मद ग़ोरी की जीत को सुनिश्चित किया। जिसने बाद में दिल्ली व अजमेर पर कब्जा कर अपना शासन स्थापित किया।

  तुर्क सैन्य शक्ति तकनीक के अलावा, सफल घुसपैठ और मुस्लिम शासन की स्थापना के लिए निम्नलिखित कारणों को श्रेय दिया जा सकता है:

- उस समय भारत में एक एकीकृत शक्ति का अभाव था। यह छोटे-छोटे राज्यों में बंटा हुआ था। प्रतिहार और चौहान उत्तर दिशा में, राष्ट्रकूट दक्षिण तथा मध्य भारत में और पाल वंश पूर्वी भारत में शासन कर रहा था।
  - छोटे राज्य अर्थात् कम शक्ति तथा कमजोर सेना। मोहम्मद ग़ोरी ने आसानी से इन सबको हरा दिया।
  - राजपूत आपस में ही वर्चस्व की लड़ाई लड़ रहे थे।

उसके बाद भारत के प्रथम मुस्लिम वंश गुलाम वंश की स्थापना कुतुबुद्दीन-ऐबक द्वारा 1206 ई. में की गयी। अपने चार वर्ष के शासन काल में वह राजपूतों के विभिन्न विद्रोह दबाने में सफल रहा। बहादुर व दयालु स्वभाव के कारण उसे 'लाख बक्श' की उपाधि दी गयी। मुस्लिम शासन का सुदृढ़ीकरण इल्तुमिश के शासन काल में हुआ। जिसने 1210 से 1236 ई. तक राज किया। अलाउद्दीन खिलजी के शासकाल में दिल्ली सल्तनत का प्रसार गुजरात, राजस्थान, मालवा, उज्जैन व आस-पास के क्षेत्रों को जीतकर किया। दक्षिण भारत में भी प्रसार के प्रयास किए गए।

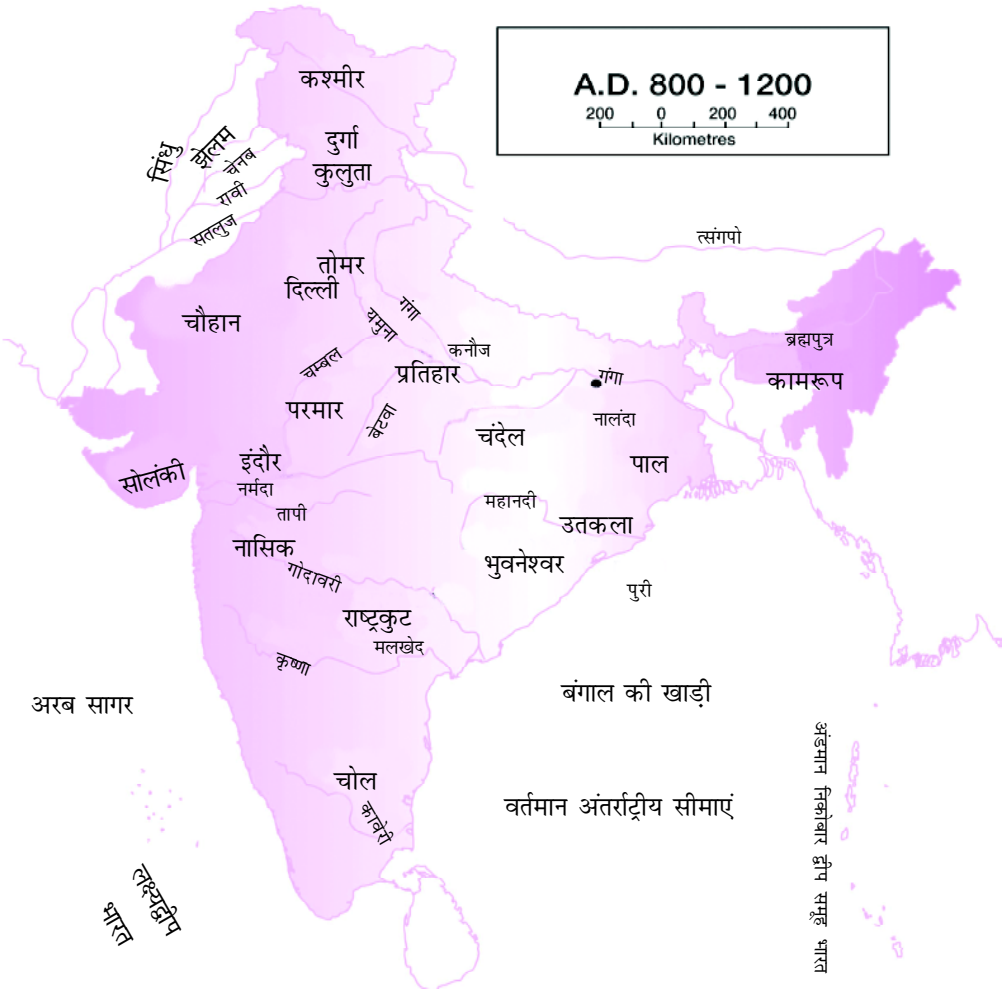

मानचित्र 5.1 भारत (800-1200ई.वी)

पाठगत प्रश्न 5.2

1. भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना किसने की?
2. कुतुबुद्दीन ऐबक को 'लाख बक्श' क्यों कहा जाता था?
3. तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज की हार क्यों हुई?
4. तुर्क द्वारा कौन-सी सैन्य तरीके का प्रयोग किया गया जिससे उन्हें विजय प्राप्त हुई।

5.2 सैन्य योगदान

दिल्ली सल्तनत के कालखंड में सैन्य क्षेत्र में अनेक परिवर्तन हुए। वस्तुत: जब नये शासकों को शक्ति प्राप्त हुई तो उन्होंने सैन्य संगठन में अपनी इच्छा से बदलाव किए। आमतौर पर राजा

ही समस्त सैन्य शक्ति का उच्चतर अधिनायक होता था। किन्तु दिल्ली सल्तनत में नया युद्ध मंत्रालय गठित किया गया जिसका अध्यक्ष 'दीवान-ए-अर्ज' नामक मंत्री को बनाया गया। वह अपने अधीन नवीन सैनिकों की भर्ती, प्रशिक्षण तथा अनुशासन बनाए रखने का दायित्व सम्भालता था। सेना की विभिन्न शाखाओं में हाथी, घुड़सवार तथा पैदल सेना होती थी। अनुभवी व विश्वासपात्र लोगों को अनुशासन एवं वफादारी बनाए रखने का कार्य दिया गया। घुड़सवार सेना को उनके गति व प्रभावशीलता के कारण ज्यादा महत्व दिया गया।

गुलाम वंश के ग्यासुद्दीन बलबन के शासन में मुख्य सेना का निर्माण किया ताकि आंतरिक विद्रोह दबाया जा सके। सेना को कमाण्डों में पुनर्गठित किया गया। प्रत्येक कमाण्ड कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए उत्तरदायी थी। जो विद्रोह के दौरान सुल्तान को सहयोग देते थे। सीमाओं की किलाबंदी की गई ताकि शक्तिशाली शासन सुनिश्चित किया जा सके और एक प्रभावशाली गुप्तचर व्यवस्था बनाई जा सके।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.) ने खिलजी वंश के क्षेत्र को बढ़ाने तथा मंगोलों से अपने राज्य की रक्षा के लिए एक स्थायी सेना का गठन किया। मंगोलों द्वारा बारूद का प्रयोग भारत में किया जा रहा था और यह पूरे भारत में प्रयोग होने लगा। दिल्ली सल्तनत के शासकों ने तोपों तथा आग्नेयास्त्रों का प्रयोग कुछ सैन्य युद्धों में किया। आप खिलजी वंश के शासन क्षेत्र को मानचित्र 5.2 में देख सकते हैं आप यह आगे देखेंगे कि आग्नेयाशस्त्रों तथा तोपों का प्रभावी प्रयोग मुगलों द्वारा किया गया।

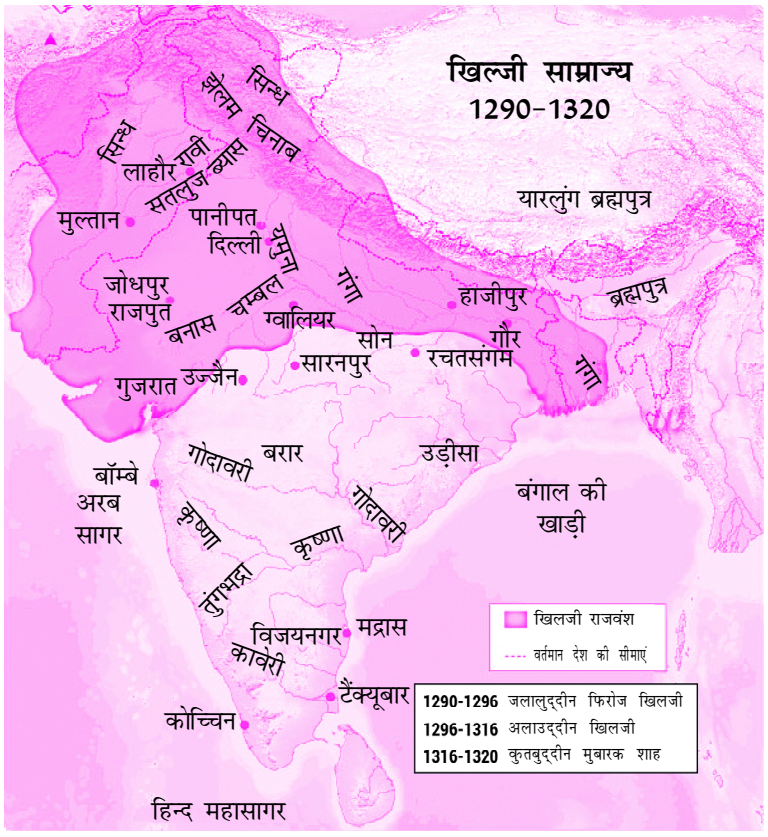

मानचित्र 5.2

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 5.3

1. उस मंत्री का नाम बताइए जिनके अधीन नया युद्ध मंत्रालय गठित किया गया?
2. सेना का पुनर्गठन किस प्रकार हुआ?

5.3 दिल्ली सल्तनत का पतन

दिल्ली सल्तनत के पतन होने के अनेक कारण हैं। इसकी शुरूआत तुगलक वंश से हुई थी। यह बात महत्वपूर्ण है कि असफल अभियानों ने दिल्ली सल्तनत के शासन को कमज़ोर किया। उदाहरण के लिए तुगलक के वारिसों द्वारा तैमूर पर आक्रमण से इनकी शक्ति क्षीण हुई और अनेक क्षेत्रों ने दिल्ली, गुजरात, मालवा, पंजाब और राजस्थान के अधिकारियों से स्वायत्तता मांगना शुरू कर दिया, जिन्हें जबरदस्ती अपने में मिलाया गया था। स्थितियां बदलीं और उन्होंने स्वायत्तता के लिए आंदोलनल शुरू कर दिए।

दिल्ली सल्तनत के पतन का दूसरा कारण आंतरिक सत्ता लोलुपता थी। उत्तराधिकार के युद्ध निरंतर होते रहे। राजवंश विश्वासघात और धोखे से जूझ रहे थे। हर वंश में वारिस आपस में लड़ रहे थे। शाही परिवारों में धोखा और बगावत आम बात थी।

तीसरा प्रमुख कारण यह था कि वे एक बड़ी सेना को रखने में अक्षम थे। वेतन तथा भुगतान संबंधी समस्याएं थीं। विभिन्न प्रकार के करों द्वारा एकत्रित धन का सेना पर उपयोग हो रहा था जिससे राज्यों पर आर्थिक बोझ पड़ रहा था और लोग नये करों का भुगतान नहीं कर पा रहे थे। इसी कारण वे अपने पड़ोसी राज्यों पर कब्जा कर रहे थे जिससे वे अपनी धन संपदा खो बैठे।

चौथा कारण था किराए की सेना पर नियंत्रण नहीं कर पाना। ये व्यक्ति जिन्हें भाड़े के सैनिक कहा जाता था; धन के लिए किसी की भी सेवा करते थे। इससे छोटे राजाओं ने इन सैनिकों का प्रयोग करके सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह किया।

पाचवां कारण था आंतरिक कलह। उदाहरण के लिए दिल्ली सल्तनत के सुल्तान इब्राहिम लोधी (1517-1526 ई.) के विरुद्ध उनके भाई जलाल खान ने विद्रोह किया। इस अशांति के कारण बाबर पानीपत के प्रथम युद्ध में (1526 ई.) लोधी को हराकर मुगल साम्राज्य की स्थापना करने में सफल हुआ।

पाठगत प्रश्न 5.4

1. भाड़े के सैनिक कौन होते हैं?
2. दिल्ली सल्तनत के पतन के कोई तीन कारण लिखिए।

आपने क्या सीखा

इस पाठ को पढ़ने के उपरांत आपने यह जाना कि

- मध्यकालीन भारत में अनेक देशी रियासतें थीं।
- इन रियासतों में एकता न होने के कारण विदेशी आक्रमणों को प्रोत्साहन मिला।
- प्रथम विदेशी आक्रमण मोहम्मद ग़ोरी द्वारा 1191-1192 ई. में किया गया।
- दिल्ली सल्तनत की स्थापना मोहम्मद ग़ोरी के तराइन के द्वितीय युद्ध के जीत के कारण हुई।
- राजपूत अपनी बहादुरी के लिए जाने जाते थे और संख्या की दृष्टि से बेहतर थे।
- अधिक सैन्य शक्ति होने के बाद भी राजपूत विदेशी आक्रांताओं की प्रभावी सैन्य नीति को समझ नहीं पाए। इसी कारण मुस्लिम शासन की स्थापना हुई।
- सेना में अनेक परिवर्तन हुए। विभिन्न सैन्य टुकड़ियों का निर्माण सेनानायक के अधीन हुआ। स्थायी सेना का भी गठन किया गया।
- बारूद के आविष्कार के कारण तोपों का भी प्रयोग किया गया।
- दिल्ली सल्तनत अपने शासन को इसलिए नहीं बचा पायी क्योंकि वे आंतरिक विद्रोह को नहीं दबा पाए।
- दिल्ली सल्तनत के शासन का अंत मुगल शासक बाबर के आक्रमण के साथ हुआ।

पाठांत प्रश्न

1. मोहम्मद ग़ोरी द्वारा पानीपत की दूसरी लड़ाई में प्रयुक्त सैन्य तकनीकों के प्रयोग का विवरण लिखिए।
2. दिल्ली सल्तनत के शासनकाल में कौन से सैन्य सुधार किए गए।
3. बलबन के सैन्य योगदान को उजागर कीजिए।
4. दिल्ली सल्तनत के पतन के कोई चार कारण लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1

1. विभिन्न रियासतों के मध्य एकता का अभाव था इसलिए विदेशी आक्रांता आसानी से अपने राज्य का प्रसार करने हेतु आक्रमण करते थे।

2. भारत में अपनी पैठ जमाने व धन संपत्ति प्राप्त करने हेतु।
3. खैबर दर्रा अफगानिस्तान के काबुल को पाकिस्तान के पेशावर से जोड़ता है।
4. राजपूत क्षत्रिय वर्ग से थे तथा वे संस्कृत में राजपुत्र कहलाते थे।
5. इनसे मुगल साम्राज्य की स्थापना की नींव डाली गयी तथा खैबर दर्रा आक्रमण का मुख्य मार्ग बन गया।

5.2

1. कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1206 ई. में।
2. उत्तरी भारत में शासकों की एकता का अभाव, आपसी कलह तथा तराइन के द्वितीय युद्ध में मोहम्मद ग़ोरी की विजय।
3. 'लाख बक्श' का नाम उनकी वीरता व दयालु स्वभाव के कारण दिया गया था।
4. मोहम्मद ग़ोरी की सेना आक्रमण के लिए नवीन तकनीकों का प्रयोग करती थी। इन सैन्य तरीकों का राजपूत सेना में अभाव था।
5. शत्रु की सेना को बीच में ला के चारों ओर से घेराबंदी करना।

5.3

1. नयी युद्ध मंत्रालय के मंत्री का नाम दीवान-ए-अर्ज था।
2. सेना को विभिन्न सेना नायकों के अधीन किया गया ताकि कानून व्यवस्था का शासन चल सके।
3. तोप और आग्नेयास्त्रों का प्रयोग दिल्ली सल्तनत में कम किया गया। किन्तु मुगलों ने इनके प्रयोग को प्रोत्साहन दिया।

5.4

1. भाड़े के सैनिकों को धन लाभ के लिए युद्ध करने हेतु नियुक्त किया जाता था।
2. आपसी आंतरिक कलह, बड़ी सेना की देखभाल, भाड़े के सैनिकों का प्रयोग आदि।